Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती की शिक्षण पद्धति का परिशीलन

KULDEEP KAUR1 & PROF. (DR.) GURPREET KAUR2

[1]Research Scholar Music Department, Guru Nanak Dev University, Amritsar
[2]Faculty of Visual & Performing Arts, Guru Nanak Dev University, Amritsar

सार

भारतीय संस्कृति में गुरु अथवा शिक्षक को विशेष महत्व प्राप्त है। अपने विद्यार्थी को संस्थागत शैक्षणिक गुणों से परिपूर्ण कर, उसके व्यक्तित्व का विकास करने में गुरु की विलक्षण भूमिका होती है। उत्तम शिक्षक के अभाव में विद्यार्थी के ज्ञान की सरिता का प्रवाह अवरुद्ध होगा, जिससे ज्ञान की संचित धरोहर का आगे बढ़ पाना संभव नहीं है। अतः इस श्रृंखला में शिक्षक एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसके स्वयं के व्यक्तित्व का सर्वगुण संपन्न तथा अनुकरणीय होना भी अभीष्ट है। डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती ऐसी ही शिक्षिका हैं, जिनका जीवन संगीत कला की उपासना और शिक्षण दोनों को समर्पित रहा है। आपने अपनी शिक्षण यात्रा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर से आरंभ करते हुए, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला में प्रोफेसर व डीन तथा इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ में कुलपति के रूप में बहुत सी उपलब्धियां अर्जित की। अपने विद्यार्थियों के माध्यम से संगीत शिक्षा की उन्नतशीलता में अहम भूमिका निभाई। आपकी शिक्षण विधि में विविध विलक्षणताओं का उचित सुमेल है।

मुख्य शब्द- व्यक्तित्व, अध्यापन, शिक्षण यात्रा, शिक्षण पद्धति, विशेषताएं

भूमिका

शिक्षा ग्रहण करना प्रत्येक मानव का आधारभूत अधिकार है। शिक्षा मानवीय बुद्धि को तीक्ष्ण कर अंतरंग विवेक को जागृत करती है। शिक्षक हमें शिक्षा के महत्व, उपयोग और उससे प्रेरित मानवीय मूल्यों को आत्मसात करने की कला सिखाता है। एक शिक्षक का धर्म शिक्षार्थी और उसकी मूलभूत कौशलता को परिष्कृत करना तथा जिज्ञासा की पूर्ति कर शोध की प्रवृत्ति पैदा करना है। एक आदर्श अध्यापक ज्ञान की अग्नि प्रज्वलित कर अपने शिष्यों के पथ को आलोकित करने का सुधी कार्य करने में सक्षम होता है। 'भारतीय वाडमय में आचार्य उस शिक्षक को कहा गया है, जिसका आचरण श्रेष्ठ एवं अनुकरणीय हो तथा जो अपने उत्कृष्ट आचरण द्वारा ही शिष्यों का उत्कृष्ट चित्रण निमाण कर सके।'[1]

ईश्वर प्रदत्त जीवन रूपी उपहार का सामान्यतयः उपभोग करते हैं, परंतू कुछ विरले व्यक्ति एक-एक क्षण का पूर्ण उपयोग कर अपनी मंजिलों को सर करते हैं। वे कठिनाइयों, संघर्षों और चुनौतियों से क्षुब्ध हो, अपने जीवन से उदासीन नहीं होते, अपितु संघर्ष को पार करते साधारण से विशेष बन जाते हैं। उनके द्वारा किए गए कर्म अन्यों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन जाते हैं। संगीत एक ऐसा विषय है, जो गुरु की योग्य निरीक्षण दृष्टि, उचित मार्गदर्शन के साथ शिष्य के समर्पण, अनुशासन, उत्साह तथा कठिन परिश्रम की भी मांग करता है। प्रो. (डॉ.) इंद्राणी जी की शिक्षण यात्रा एवं अनुभवों से उनके विद्यार्थियों ने जीवन का पाठ सीखा और सफलता अर्जित की।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती की शिक्षण यात्रा एवं अनुभव- संक्षिप्त परिचय

डॉ. इंद्राणी का सम्बन्ध वाराणसी के पारंपरिक परिवार से रहा है। पीएच.डी. का शोध कार्य करने उपरांत आपको कानपुर में एक नौकरी मिली, तो उन्हें नौकरी करने की अनुमति नहीं मिली और उन्हें ये अवसर बलिदान करना पड़ा। कुछ समय पश्चात जब आपकी कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में सहायक आचार्य के रूप में नियुक्ति हुई, तो आपने दृढ़ संकल्प कर अपने परिवार की सोच को बदलने का निर्णय ले लिया। अपने पिता जी को बहुत आश्वस्त करने के बाद कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय जाने की आज्ञा आपको मिल गई। शुरुआती में आपके पिताजी को लगा कि घर से दूर नौकरी करना कठिन है, अतः आप कुछ ही दिनों में वापस आ जाएंगी, परंतु डॉ. इंद्राणी ने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। अध्यापन कार्य के साथ ही उन्होंने अपने जीवन का ऐसा अध्ययन शुरू किया, जो दूसरों के पथ को आलोकित करने वाला था। एक के बाद एक मंजिलों को पार करती हुई, वह निरंतर आगे बढ़ती गई। 5 नवंबर, सन् 1975 में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संगीत एवं कला विभाग की स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए सितार की प्रथम प्राध्यापिका के रूप में डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती कार्यरत हुई।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में संगीत विभाग तीन सदस्यों- पंडित नारायण राव पटवर्धन जी विभागाध्यक्ष (गायन), मधुबाला सक्सेना जी प्राध्यापिक (गायन) तथा स्वयं डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती प्राध्यापिका (सितार) द्वारा प्रारंभ किया गया। आप तीनों की लगन, निष्ठा, संयुक्त प्रयास, परिश्रम तथा संगीत के प्रति अनुराग ने संगीत विभाग को ना केवल अस्तित्व दिया, बल्कि विकास की ओर अग्रसर भी किया। यहां पर आपने लगभग पांच से छः वर्ष तक अपनी सेवाएं दी। विभाग के दायित्व को निभाने के साथ संगीत के व्यवहारिक पक्ष को सशक्त करने के लिए सप्ताह में शनिवार के दिन अपनी कक्षाएं समाप्त कर दिल्ली में पंडित देवव्रत चैधरी जी के पास सितार सीखने के लिए भी जाती थी।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के बाद आपने 8 सितंबर, सन् 1981 में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के संगीत विभाग में असोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला। यहां आपको प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, परंतु आप अपनी धुन में आगे बढ़ती गई। निराश होना, हार मानना या शिकायत करना आपने नहीं सीखा। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के संगीत विभाग में उस समय चार-पांच प्राध्यापक ही थे, जिनमें तीन लेक्चरार, दो डिमॉन्सट्रेटर थे। यहां आकर डॉ. इंद्राणी ने संगीत विभाग के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए एम.फिल. और पीएच.डी. की उपाधि को प्रारंभ करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। "पहले संगीत विषय में ना तो एम.फिल. थी और ना ही पीएच.डी में शोध कार्य करने की सुविधा। विभाग में एक भी ऐसा शिक्षक नहीं था, जो एम.फिल. या पीएच.डी. करवा सके। संगीत में एम. ए. करने वाले विद्यार्थियों का भविष्य अन्धकारमय था, क्योंकि केवल एम. ए. पास छात्र बिना एम.फिल. के कॉलेज तथा विश्वविद्यालय में नौकरी के लिए उपयुक्त नहीं थे।

इस समस्या का हल करने के बारे में हम कभी भी फरियाद नहीं कर सकते थे। राजनीति शास्त्र के विभागाध्यक्ष को ही हमारे विभाग का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा हुआ था। विभाग पूर्णतया अपेक्षित था। ऐसे में जब हम लोग अपने भविष्य के प्रति उदासीन होने लगे थे, विभागाध्यक्ष के रूप में मैडम का आना, हमारे भाग्योदय से कम नहीं था। शायद ईश्वर ने हमारी प्रार्थना सुन ली हो, तभी उन्हें हमारे विभाग में नियुक्ति दी थी।''[2] ''संगीत से जुड़ा अपना विभागाध्यक्ष बनने से विभाग को विस्तार प्रदान करने के सभी मार्ग प्रशस्त हुए। यद्यपि विभाग में पहले से कार्यरत विद्वान एवं उच्च विचारक थे, परंतु पद के नियमानुसार पदोन्नति के मार्ग में उनकी अकादमिक योग्यता आड़े आ रही थी। मैडम ने विभाग में कार्यरत शिक्षकों के नियमों में ढील प्रदान कर एम.फिल. करवाने का दायित्व सौंपा तथा अपने मार्गदर्शन में विभाग के युवा,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

कर्मठ, शिक्षक प्रो. चमन वर्मा जी को पीएच.डी. करवा कर एक ऐसी सशक्त टीम का गठन किया, जिससे विभाग की आगामी प्रगति के समस्त मार्ग स्वतः खुल गए।''[3]

कुरुक्षेत्र और हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संगीत विभागों में कार्यरत रहने के अतिरिक्त आप इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय की दो बार (सन् 1997 से 2000 तथा 2000 से 2004 तक) कुलपति भी रही। उपरांत अप्रैल 2004 में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में हेड व डीन का पद संभाला और जून 2008 में वहीं से सेवानिवृत्त हुई। 2008 से डॉ. इंद्राणी 'सत्य साईं मीरपुरी कॉलेज ऑफ म्यूज़िक' की प्रिंसिपल के रूप में इस संस्था को नई पहचान दे रही है।

प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती की शिक्षण पद्धति की विशेषताएं

डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती की शिक्षण पद्धति की विशेषताओं को उनके शिष्यों, अन्य शिक्षकों तथा कलाकारों से किए साक्षात्कार व उनके व्याख्यानों के आधार पर उल्लेखित करने का प्रयास किया गया है:

अपने विषय में निपुणता व पारंगता

एक योग्य शिक्षक योग्यता की उपाधि को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक उसे अपने विषय पर पूर्ण अधिकार तथा निपुणता प्राप्त नहीं हो जाती। इस परिपेक्ष्य में डॉ. इंद्राणी जी की योग्यता स्वयं में ही एक कसौटी है। संगीत शास्त्र संबंधी किसी भी विषय पर उनसे चर्चा की जा सकती है। मूल ग्रंथों की बात वह सहज रूप से ऐसे उद्धरण करती हैं कि पुस्तक उनके सामने हो। यह उनके गहन और सूक्ष्म अध्ययन की पहचान भी है। जब भी कोई उनसे संगीत को लेकर कोई प्रश्न पूछता है, तो वे तत्पर जवाब देने में सक्षम है। उनका मानना है कि अपने विषय के अलग-अलग पहलुओं पर जितना हम सोचते हैं, उतना ही हमें विषय को समझने के नए-नए रास्ते मिलते हैं। श्री प्रफुल्ल मेहरा के शब्दों में Whenever I discussed anything in theory, Madam spoke with no limitation. She made us understand the ragas and Shrutis in a scientific and aesthetic manner, not only Hindustani ragas but in Caranatic ragas also.[4] इससे स्पष्ट होता है कि "डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती की विषय की गहराइयों तक पैठ है। विषय का विश्लेषणात्मक व्याख्यान श्रोता के मन मस्तिष्क में सहजता से आत्मसात होकर अमिट हो जाता है।''[5]

डॉ. इंद्राणी जी के ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। उनके पास नए-नए विचारों की भरमार है। इसका प्रमाण यह है कि अपने शोधार्थियों को आपने स्वयं ही शोध के विषय दिए हैं और आश्चर्य की बात यह है कि सभी एक दूसरे से भिन्न है। इतना ही नहीं, आपके व्याख्यानों में भी एक ही विषय की पूर्ति नहीं होती, अपितु संगीत के विविध विषयों जैसे लोक संगीत, किन्नरी वीणा, सरोद, सितार, बांसुरी, मत्तकोकिला, संतूर, वायलिन, ग्राम, मूर्च्छना, श्रुति, सारणा, मार्ग-देशी, आधार स्वर, गुरु-शिष्य परंपरा, वॉइस कल्चर तथा सांगीतिक ग्रंथों से संबंधित हर तरह के विषयों का आपने चयन किया। अन्य निर्देशकों के अंतर्गत शोध करने वाले शोधार्थी, जब आपके पास विषय संबंधी जानकारी लेने आते, तो आप कुछ ही पल में उन्हें कितने नवीन विषय बता देती।

शिक्षक, कलाकार तथा पथ प्रदर्शक का मणिकांचन सुमेल

प्रायः यह देखा गया है कि एक उत्तम कलाकार मंच पर सफल प्रस्तुति देता है, परंतु शिक्षक के रूप में असफल हो जाता है। ऐसे ही एक शिक्षक, विद्यार्थियों को संगीत का ज्ञान तो देता है, परंतु मंच प्रस्तुति की जानकारी नहीं दे पाता। दोनों ही परिस्थितियों में स्वयं को एक निश्चित परिधि में सीमित कर लेना इसका कारण बनता है। संगीत एक ऐसी विधा है,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

जिसका शास्त्र और क्रियापक्ष दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों में से किसी एक का भी अभाव आपको पूर्ण नहीं होने देता। अतः एक योग्य शिक्षक का गुणी कलाकार होना नितांत आवश्यक है। डॉ. इंद्राणी जी के व्यक्तित्व में दोनों का समावेश देखने को मिलता है। डॉ. गोरे लाल चंदेल के शब्दों में "एक शिक्षक होना और एक कलाकार होना तथा दोनों के बीच एक समन्वय होना बहुत बड़ी बात है। यह समन्वय निश्चित तौर पर डॉ. इंद्राणी जी में है। जब शिक्षक और कलाकार के बीच सम्बन्ध बनेगा, तभी ही शिक्षार्थी पूर्ण रूप से कला को सीख सकता है तथा आगे इस कला को विकसित कर सकता है। उनके व्यक्तित्व में मैं लगातार इन बातों को देखता आया हूं। साथ ही जब वह प्रशासनिक कार्यों पर बैठती थी, तो शिक्षक, कलाकार और प्रशासक तीनों में तालमेल बनाने का सफल प्रयास लगातार करती रही हैं।''[6]

सांगीतिक कला में शास्त्र पक्ष के महत्व को प्रतिपादित करती हुई, प्रो. मांडवी सिंह कहती हैं, "कला का उद्देश्य केवल यह नहीं कि प्रदर्शन किया जाए और सिखाया जाए, बल्कि उसकी गहराई को जानने हेतु शास्त्र का भी उतना ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह दोनों पक्ष मैडम इंद्राणी में सकारात्मक रूप में दिखते हैं।''[7] इंद्राणी जी ने अपनी साधना के चलते शिक्षिका के कर्तव्य को कभी अनदेखा नहीं किया और ना ही अभ्यास के मार्ग में शिक्षण को आने दिया। श्रीमती इंदु बताती हैं कि, "जब मैडम एक शिक्षिका के रूप में हमें सितार सिखाती थी, तो उन्होंने अपना रियाज़ कभी नहीं छोड़ा। वे एक शिक्षक और कलाकार दोनों में संतुलन यही है कि क्लास भी अच्छे से लेना और प्रोग्राम भी करने (मंच प्रस्तुतीकरण भी करना)। ऐसा कभी नहीं हुआ कि अपने रियाज़ के लिए उन्होंने हमारी कक्षा ना ली हो।''[8] जहां पर संतुलन या सामंजस्य बैठाने की बात आती है, तो डॉ. इंद्राणी स्वयं एक प्रेरणा है। श्री निशिकांत बड़ोदेकर जी के शब्दों में, "बहुत सारे ऐसे प्रोफेशनल आर्टिस्ट है, जो प्रैक्टीकल को जब सिखाने बैठते हैं तो They can't teach, if they can't express इस टेक्निकल प्रोसेस को मैडम इंद्राणी बहुत अच्छे से बताती हैं। सितार पर हाथ का सही रख-रखाव क्या है, कहां से क्या बोल बजता है, इस तरह से जो सितार के टेक्निकल पॉइंट्स हैं, इन्हें मैडम बहुत अच्छे से व्याख्यायित करती हैं।''[9]

शार्टकट विधि के प्रयोग की विरोधी

डॉ. इंद्राणी ने संगीत शिक्षा ग्रहण और प्रदान करने में कभी शॉर्टकट का प्रयोग नहीं किया। ना ही अपने छात्र-छात्राओं को ऐसा कभी करने दिया। जिस विधि से उन्होंने अपने गुरुजनों से सीखा, वैसा ही उन्होंने अपने शिष्यों को सिखाने का प्रयास किया। वे कहती हैं कि ''मेरे सितार के गुरु सेनिया घराने के प्रख्यात कलाकार पंडित देवव्रत चैधूरी जी ने सितार वादन की शिक्षा देते समय किसी प्रकार की शॉर्टकट विधि का प्रयोग नहीं किया है। जिस प्रकार कठिन परिश्रम द्वारा मैंने अपने गुरुओं से संगीत शिक्षा ली, वहीं शिक्षा मैं अपने छात्रों को देना चाहती हूं।''[10]

विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग

एक आदर्श शिक्षक अपने छात्रों की प्रकृति व रुचि के अनुसार उसके स्तर पर जाकर उसे समझाने का गुण रखता है। डॉ. इंद्राणी जी ने अपने विद्यार्थियों को विषय का पूर्ण ज्ञान दिया है। विद्यार्थी उनका पढ़ाया विषय पूर्ण रूप से आत्मसात करे, इसके लिए वे विभिन शिक्षण विधियों का प्रयोग करती थी। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे कभी भी कक्षा में नोट्स नहीं देती थी। उनका कहना है कि, "मैं कक्षा में किसी भी विद्यार्थी को नोट्स नहीं देती हूं। ये मेरी आदत नहीं है। जब भी मैं किसी नए विषय के बारे में पढ़ा रही होती हूं, तो अगर वे विद्यार्थी को समझ में न आए, तो मैं उसे बार-बार समझाने का प्रयास करती हूं। जब वह समझ जाए तब ही अन्य विषय की ओर बढ़ती हूं।''[11] आप जो भी पढ़ाती हैं, उसे

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

उसी रूप में व्यावहारिक पद्धति अनुसार भी प्रस्तुत करके दिखाती है। उनका पढ़ाने का ढंग इतना प्रभावपूर्ण है कि विद्यार्थी ग्रंथो में लिखी बातों को न केवल सरलता व सहजता से समझने का प्रयास करते हैं, वहीं उसके व्यवहारिक पक्ष को भी आत्मसात करते हैं।

कठोर शिक्षण तथा विद्यार्थियों की तकनीकी त्रुटियों का यथायोग्य निवारण

एक अध्यापक के स्वभाव में धैर्य, स्नेह, अनुशासनबद्धता व कठोरता का समावेश होना अपेक्षित है। डॉ. इंद्राणी अपने शिष्यों को समझाते हुए किसी तरह की अनुशासनहीनता या काम में ढील कतई सहन नहीं करती। "अत्यंत स्पष्टवादी, कठोर वचनों से संशोधित करना तो दीदी की आदतों में अन्यतम है, साथ ही एक नारी की मातृत्वमई व्यंजन विशेषज्ञता, भोजन परिवेषण की दक्षता और निः स्वार्थ विवेकपूर्ण सिद्धांतों को जीवन में अमल प्रदान करना इनका सम्भाव है।"[12] डॉ. इंद्राणी जी के वात्सल्य पूर्ण स्नेह और इनकी डांट दोनों में प्रेरणा छिपी होती है। जिस कड़ी मेहनत और जिस उच्च गुणवत्ता का काम डॉ. इंद्राणी स्वयं करती हैं, वैसी ही अपेक्षा अपने शोधार्थियों से रखती हैं। प्रो. चक्रवर्ती के इन्हीं गुणों को ग्रहण कर, उनके शिष्य आज सफलता के सोपान पर चढ़े हैं। डॉ. इंद्राणी शिक्षिका के तौर पर अपने कर्तव्य को संयम से निभाना जानती है।

एक शिक्षक अपने विद्यार्थी का दायित्व केवल कक्षा तक ही नहीं लेता, बल्कि उसके पूर्ण व्यक्तित्व के परिष्कार के लिए उत्तरदायी रहता है। ठीक वैसे ही प्रो. चक्रवर्ती अपने विद्यार्थियों से निश्चित सीमा के बाद भी अध्ययन करने की अपेक्षा रखती है। प्रो. इंद्राणी चक्रवर्ती संगीत के तकनीकी पक्ष से भलीभांति परिचित है। संगीत शास्त्र के परिभाषिक शब्दों का आपने गहन, चिंतन व मनन किया है। आप विद्यार्थियों के लेखन तथा वादन अभ्यास पर ना केवल पैनी दृष्टि रखती, बल्कि उनकी तकनीकी त्रुटियों का भी सजगता से निवारण करती। अपने विद्यार्थियों की कमियों को दूर करने के लिए, चाहे आपको कठोरता से व्यवहार करना पड़े, परंतु आपका अंतर्मन प्रेम से परिपूर्ण है। यही कारण है कि आप अपने शिष्यों को हमेशा कुछ करने के लिए प्रेरित करती रहीं हैं। किस विद्यार्थी की ग्राहय क्षमता कैसी है, यह बात आप अच्छे से जानती हैं। इसी कारण आपसे शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र-छात्राएं संगीत के किसी भी विषय को लेकर कभी संशय ग्रस्त नहीं होते।

विद्यार्थियों में रचनात्मकता और मौलिकता की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना

संगीत विद्या में जब शिष्य अपने गुरु का अनुसरण करता है, तब कई बार सीखने वाले की स्वयं की क्षमता कहीं दब जाती है। कई शिक्षक या कलाकार ऐसे होते हैं जो शिष्यों की कल्पना शक्ति और मेधा का प्रयोग उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ाने में करते हैं, जिसमें नियम केवल यह होता है, कि इस योजना के तहत किसी राग की शुद्धता भंग ना हो अथवा वैसी ही बनी रहे। डॉ. इंद्राणी जी भी ऐसी दुर्लभ श्रेणी की शिक्षिका है। कल्पना और सृजनशीलता के बारे में वह स्वयं बताती है कि "एक बार एम. म्यूज. की कक्षा में मेरे गुरु डॉ. लालमणि मिश्र जी ने मुझे प्रथम गत कराई। गत कराने के बाद बोले कि 'सुनाओ' तो मैं खाली गत के ही तीन-चार आवर्तन बजाती रहीं। वह बोले कि खाली गत बजाती रहोगी या कुछ और भी बजाओगी, तो मैं इनकी बात समझ नहीं पाई। बाद में उन्होंने मुझे बोला कि 'तुमने क्या सोचा कि मैं तुम्हें लिखवा दूंगा? फिर तुम एम. म्यूज. में क्यों आई हो' इसके बाद वह समझाने लगे कि खाली गत को ही ऐसे रखना है। बाकी तुम्हारी अपनी कल्पना चाहिए। इस तरह मेरी इंप्रोवाइजेशन को उन्होंने काफी मज़बूत बना दिया। बाद में पंडित देवव्रत जी ने इसे और बल दिया।"[13] जैसे गुण आपको अपने गुरुजनों से प्राप्त हुए, वैसे ही गुण अपने छात्रों को

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

देने का हमेशा आपका प्रयास रहा है। इंद्राणी जी हमेशा यही चाहती रहीं हैं, कि उनका विद्यार्थी ऐसा बजाए कि सुनने वाला आश्चर्यचकित रह जाए। वह चाहती थी कि उनके स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों का स्तर एक परफॉर्मर के स्तर जैसा हो। उन्होंने अपने छात्रों को व्यावहारिक पक्ष का ज्ञान गुरु-शिष्य शिक्षण पद्धति के माध्यम से ही दिया, जिसने विद्यार्थियों के सृजन पक्ष को बेहतर और दृढ़ बनाया।

उदारतापूर्वक संगीत शिक्षण तथा विद्यार्थियों के साथ सौहार्दपूर्ण तारतम्य

प्रो. चक्रवर्ती विशाल उदार हृदय की स्वामिनी है। कुछ कलाकार शिक्षा देते समय अपने सभी गुण शिष्यों को नहीं देते। ऐसे में संगीत की दुर्लभ विधियां समाप्त हो जाती हैं। जबकि इस संदर्भ में इंद्राणी जी का दृष्टिकोण स्पष्ट है। वे अपने विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा में सर्वगुण संपन्न देखने की आकांक्षी है। इसलिए उन्होंने विद्यार्थियों को उनके स्तर पर पहुंचकर समझाया, क्योंकि कक्षा में कई बार जल्दी में पाठ पूर्ण स्मरण नहीं हो पाता, इसलिए उन्होंने उसे रिकॉर्ड करने की अनुमति भी दी, ताकि उसे बार-बार सुना जा सके। रियाज़ करवाते समय वे सितार को पकड़ने से लेकर वादन तक की पूर्ण विधि बताते हुए एक-एक विद्यार्थी से दोबारा सुनती भी थी। डॉ. इंद्राणी जी का अपने छात्र-छात्राओं के साथ संबंध केवल कक्षा तक ही सीमित नहीं, उन्होंने अपने शिष्यों को संगीत कला के साथ-साथ जीवन जीने की कला भी सिखाई। वह उनकी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान हेतु भी प्रयास किए। आप अपने विद्यार्थियों से इतना निकट थी कि वे उनसे अपनी पारिवारिक समस्याएं बताने में भी संकोच नहीं करते थे। उनका प्रेम ही विद्यार्थियों को अनेक कष्टों का सामना कर अपना लक्ष्य पूरा करने में प्रेरक तत्व रहा है। डॉ. सूरत ठाकुर उनकी इसी प्रेरणा को आलोकित करते हैं कि, "कई बार तो मन में यह ख्याल उठता था कि मुझे पीएच.डी. बीच में ही छोड़ देनी चाहिए। पर दूसरे ही पल इनका स्नेह मेरी सारी निराशा तिरोहित करके नई प्रेरणा जागृत करवाता।"[14] डॉ. इंद्राणी जी का अपने छात्र-छात्राओं से तारतम्य अत्यंत सौहार्दपूर्ण है। उनके विद्यार्थी ही उनकी वास्तविक पूंजी है और उनकी उपलब्धियों पर इंद्राणी जी को गर्व है। अपने विद्यार्थियों से कठिन परिश्रम कराने की क्षमता आपको विलक्षण बनाती है। यही कारण है कि पहले तो विद्यार्थी आपसे पढ़ने से डरते हैं, लेकिन आप से मिलने और आप की शिक्षण पद्धति से अवगत होने के बाद आपके लिए उनके मन में सम्मान की भावना और भी बढ़ जाती है। आर्थिक रूप से कमज़ोर व प्रतिभावान छात्रों को आप विशेष रूप से प्रोत्साहित कर उनका मनोबल बढ़ाती हैं।

स्वर ज्ञान तथा राग विश्लेषण विधि

संगीत शिक्षक के पास अपने विशिष्ट ज्ञान के साथ-साथ प्राचीन परंपरागत विद्या का संग्रह पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए। इस दृष्टि से देखा जाए तो इंद्राणी जी के पास बंदिशों का विपुल खज़ाना है। राग विश्लेषण में उनकी सूक्ष्म दृष्टि, प्रचलित कथा अप्रचलित रागों की गहरी समझ उन्हें संगीत विद्या का धनी बनाती है। विद्यार्थियों को स्वर-ज्ञान से परिचित कराना उनका विशेष मंतव्य होता है। वाद्य मिलाने और स्वर-ज्ञान के उपरांत डॉ. इंद्राणी उन्हें अलंकारों का अभ्यास तथा मिज़राब के बोल यथाः दा रा दा रा दिर दिर तथा दा रा दा का सही ढंग से रियाज़ करवाती हैं। राग विश्लेषण के समय आप विशेष शैली का प्रयोग करती है। आपके अनुसार आलाप राग विश्लेषण का माध्यम है। स्वरों के विविध प्रकार से भावनायुक्त विस्तार के उपरांत आप राग विश्लेषण की बारीकियों से शिक्षार्थियों को अवगत कराते हुए, राग के स्वरूप को पूर्णता समझाने के लिए, स्वरों के गायन के साथ वादन करने को बल देती है। आपके शिक्षण का प्रधान लक्ष्य स्वर-ज्ञान तथा राग विश्लेषण को विद्यार्थियों के मन मस्तिष्क में पूर्ण रुप से बिठाना है। आप ने स्वयं 'देवविभा' नामक एक

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

सुरीले राग की रचना की है। इसलिए आपसे केवल शिक्षण देने का गुण ही नहीं, बल्कि शिक्षा ग्रहण करने की विशिष्टता भी सीखी जा सकती है।

विषय की तकनीकियों को समझाने की कला

चूंकि संगीत की तीनों विधाओं में तकनीकी पक्ष का भी अध्ययन किया जाता है और कई बार ऐसे विषय कठिन होने से विद्यार्थियों को समझने में कठिन लगते हैं, किंतु डॉ. इंद्राणी का इसमें सिद्धहस्त होना, उनके शिक्षार्थियों के लिए बहुत लाभप्रद रहा। डॉ. सुदीप्ता के अनुसार, "उनके सितार सिखाने और शास्त्र समझाने की बात आज भी मैं अपने छात्र-छात्राओं को बताती हूं। श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, सारणा इत्यादि उन्होंने ऐसे ढंग से हमें समझाए थे कि ये सब मेरे प्रिय विषय ही बन गए।"[15]

सैद्धांतिक विषयों को समझाने की प्रायोगिक विधि

डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती की शिक्षा केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं, बल्कि ग्रंथों में लिखित सामग्री को क्रियात्मक पहलू से उन्होंने बाख़ूबी जोड़ा और दोनों का उचित तालमेल बनाया। किसी भी विषय की गहराई में जाना, उनका मूल सम्भाव और विशेष गुण है। डॉ. इंद्राणी जी से मिली शिक्षा को लेकर उनके विद्यार्थी ना केवल गौरवान्वित महसूस करते हैं, बल्कि उनकी शैली का अनुसरण आगे अपने शिष्यों को पढ़ाने में भी करते हैं। इस तरह से इंद्राणी जी की शिक्षण पद्धति उनके छात्र तथा छात्राओं के द्वारा एक परंपरा के रूप में आगे बढ़ रही है।

शोधपरक दृष्टि

यदि एक शिक्षक को ज्ञान सागर से कुछ बूंदे अपने शिष्य को देनी हो, तो पहले उसे पूरा समुद्र पीना पड़ता है। यह बात पूरी तरह से डॉ. इंद्राणी जी के व्यकित्व पर चरितार्य है। सदैव कुछ न कुछ नया, चाहे संगीत से संबंधित हो या किसी भी अन्य विषय से, ग्रहण करने की इच्छा डॉ. इंद्राणी में समान रूप में रही है। ज्ञान प्राप्ति की इसी जिज्ञासा के फलस्वरूप आपने 1981-83 में अपनी शोधपूर्ण प्रवृति से किन्नरी वीणा पर काम करने के लिए, कर्नाटक के गावों में जाकर किन्नर जोगी से इसका शिक्षण भी प्राप्त किया और कई सेमिनारों के दौरान उसका वादन करके भी दिखाया। उच्च पदों पर आसीन होने के बावजूद किसी नई विधा को सीखने के लिए जिस विनम्रता का होना अनिवार्य है, वह आप में सदा विद्यामान रहा है। उच्च पदों पर आसीन होकर भी किसी नई विधा को सीखने के लिए जिस विनम्र गुण का होना अनिवार्य होता है, वह आपमें विद्यामान है। सदैव कूछ न कुछ नया ग्रहण करने की जिज्ञासा आप में रही है। आपके द्वारा किए गए अनेक शोध कार्य निम्नलिखित हैं

1. 1981-1983 carried out extensive research work on a project called kinnari Instrument in the interior areas of Karnataka province India under the discretionary grant of Sangeet Natak academy, New Delhi.
2. 1982 Research on Tritantri or jantra- A folk classical Continuum special research on tri-stringed Veena of Rajasthan named jantar.
3. 1984, 1994-98 Major research project titled- "Traditional instrumental compositions- an explorative study" awarded by University Grant commission, New Delhi.

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

4. 1993-94 Submitted a project entitled 'Comparative study of the techniques of a plucked instruments of India and West' as national fellow of University grant commission, New Delhi.
5. 1999 Project on Raga Tarangini of Lochana- an extensive study, submitted to Indra Gandhi national centre of art, Delhi.
6. 2004-05 concept of Shiva special Research under HIS, HPU, Shimla.

डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती- शोध निर्देशिका के रूप में

किसी भी शिक्षक में शोध की प्रवृत्ति का होना, उसके विषय में निरंतर नई से नई खोज करने की वृत्ति, जिज्ञासा को उत्साहित करती रहती है। डॉ. इंद्राणी की इस विशेषता को उनके विद्यार्थियों ने भी ग्रहण किया है। एक शोध निर्देशक के रूप में प्रो. चक्रवर्ती ज्ञान का विपुल भंडार है। उनकी दूरदृष्टि और प्रोत्साहन देने का सम्भाव विद्यार्थियों को संगीत के क्षेत्र में नवीन अनुसंधान के लिए हमेशा प्रेरित करता रहा है। आपके यथेष्ठ और व्यवस्थित मार्गदर्शन का इतना सकारात्मक प्रभाव रहता था, कि शोधार्थी मात्र दो से साढ़े तीन वर्ष की अवधि में ही कठिन परिश्रम करते हुए अपना शोध संपन्न कर लेते थे। शोध कर रहे विद्यार्थियों की त्रुटियों का निवारण करती हुई, आप धैर्यपूर्वक उन्हें विषय संबंधी जानकारी देती। आपने अपने छात्र-छात्राओं को अनुसंधान के विभिन्न पक्षों का अवलोकन करने, उन्हें समझने और निरूपित करने की शिक्षा प्रदान की। यही कारण है कि आपके निर्देशन में किसी भी शोधार्थी के शोध प्रबंध में कोई भी रूकावट नहीं आई। जब भी कोई शोध-छात्र परिस्थिति वश अपना शोध कार्य छोड़ना चाहता, तो आप सकारात्मक व्यवहार से उसे शोध प्रबंध पूर्ण करने की सांत्वना देती, जिसे आप के विद्यार्थी आज भी याद करते हैं।

डॉ. बीनापानी महतो के शब्दों में, "She has a record of proceeding twenty Ph.D. Scholars inspite of her busiest schedule in the service period. I am one among them. My Ph.D. work was obstructed for some reasons. It is Indrani who saved me by accepting my request to be the guide of my Ph.D. work. After a gap of nineteen years we met at Khairagadh. Along with my work we used to discuss various topics and shared each others views."[16] उनके द्वारा करवाए गए शोध कार्य संगीत के कई अनदेखे पक्षों को आलोकित करते हैं। डॉ. सूरत ठाकुर इस विषय में कहते हैं कि, ''जब वह हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में आई, तो उन्होंने शास्त्रीय संगीत के विविध पहलुओं के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत को बढ़ावा देने के लिए पीएच.डी. के छात्रों से शोध कार्य करवाए, जिसमें हिमाचल प्रदेश के लोक-संगीत के अनछुए पक्षों को सामने लाने में मदद मिली।''[17]

शिष्य परंपरा

डॉ. इंद्राणी जी के शिष्यों की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। उनके द्वारा प्रशिक्षित छात्रों में से कुछ ने आपके मार्गदर्शन में संस्थागत प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा कुछ ने आपके निर्देशन में अपना शोध कार्य पूर्ण किया। इनके अतिरिक्त कुछ ने आपसे सितार वादन की शिक्षा भी ली। डॉ. इंद्राणी से शिक्षा प्राप्त कर बहुत से शिष्य विभिन्न विश्वविद्यालयों में उच्च पदों पर आसीन हो, उनकी दी हुई शिक्षा का प्रचार-प्रसार करते हुए, संगीत जगत में अपना योगदान दे रहें हैं। इनमें से प्रो. (डॉ.) गुरप्रीत कौर, प्रो. (डॉ.) परमानंद बंसल, प्रो. (डॉ.) चमन लाल वर्मा, प्रो. (डॉ.) मनोरमा शर्मा, डॉ. सिम्मी आर. सिंह, डॉ. सुदेश स्याल (अब स्वर्गीय), डॉ. देविंदर कौर, डॉ. सुरजीत पटियाल, डॉ. सूरत ठाकुर, डॉ. एनाक्षी महाजन,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

डॉ. नलिनी कौशल, डॉ. सीमा बत्रा, डॉ. नीता मिश्रा, डॉ. मीनू मिश्र, डॉ. मधुर स्वर मिश्र, डॉ. रमनदीप कौर, डॉ. विद्या कश्यप, डॉ. सीमा रस्तोगी, डॉ. विपिन ठाकुर, डॉ. राकेश अहिरवार, डॉ. चित्रा शर्मा, डॉ. बीनापानी महतो, डॉ. सुनीता भाले, डॉ. रीमा शर्मा, डॉ. नलिनी धरमानी, डॉ. अकशे, डॉ. कविता शर्मा, श्रीमती आशा अग्रवाल, श्रीमती इंदु, श्रीमती नीलम शर्मा, श्रीमती कनिका, पुष्पेन्द्र शर्मा, श्रीमती प्रवीण शर्मा, किशन लाल सहगल, ध्यान सिंह वर्मा, नरेन्द्र, कुमारी पराग शर्मा, नीलम, मीनाक्षी सूद, सुमन पटियाल, कुमारी लीला, सुनीता चन्देल, रीतु अग्निहोत्री, रचना रिहानी, इन्द्रजीत, प्रवीण कुमार, नीरज, दीपक गौतम, पूर्ण चन्द चैहान, अनु लखनपाल, संगीता सिन्हा, ऋचा, सुदर्शना, हेमंत, जगदीश, दीपिका, सागर साहु, श्रीमती अनीता कौशल, श्रीमती रेवा हांडा, दलबीर सिंह, अतुल दुबे इत्यादि विशेष उल्लेखनीय हैं।

प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती की शोध निर्देशन पद्धति

डॉ. इंद्राणी की शिक्षण पद्धति में अनुशासन, व्यवस्था इत्यादि गुणों के समावेश के साथ उच्च-स्तरीय गुणवत्ता भी विद्यमान है। आप स्वयं एक अध्ययन प्रिय विदूषी, स्कॉलर तथा शिक्षिका है। हर समय कुछ ना कुछ पढ़ते रहना और उसको लेकर चिंतन-मनन करना आपका सम्भाव है। अपने विषय पर पूरा अधिकार होने के साथ-साथ आप में अपने विद्यार्थियों को उनकी बौद्धिक क्षमता और प्रतिभा के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने का गुण है। पूरे मनोयोग से विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा देना, उनकी रचनात्मकता को तीक्ष्ण करना, उनकी कमियों अथवा अपूर्णताओं को दूर करना, संगीत अभ्यास के लिए प्रेरित करना, उनका उचित मार्गदर्शन करना इत्यादि के साथ-साथ डॉ. इंद्राणी की शिक्षण पद्धति में कुशल प्रदर्शक, योग्य वक्ता, ग्राह्य भाषा का प्रयोग इत्यादि कुछ ऐसी विशेषताएं हैं, जो उन्हें एक आदर्श शिक्षिका के रूप में प्रतिष्ठित करती हैं।

"डॉ. चक्रवर्ती एक बहुआयामी प्रतिभासम्पन्न शास्त्रवेता व संगीतकार हैं। उनमें ज्ञान, विज्ञान, करण, वचन, प्रयोगसिद्धि, शिष्य निष्पादन- भरत द्वारा नाट्यशास्त्र में वर्णित आदर्श आचार्य (शिक्षक) के सभी गुण विद्यमान है।"[18] इनकी शिक्षण पद्धति छात्र-छात्राओं को पूर्णता की ओर अग्रसरित करती है। शोध कार्य के क्षेत्र में इनका व्यापक अनुभव और गहन ज्ञान शोधार्थियों को एक नया आलोक प्रदान करता है। इन्हीं विलक्षण गुण और विषय की दूरदर्शिता के माध्यम से आपने विद्यार्थियों में सैद्धांतिक शिक्षा के साथ रियाज़ और कला साधना के वैशिष्ट्य का भी संचार किया। यही कारण है कि आपके सफल निर्देशन में 50 से अधिक पीएच.डी. के शोध प्रबंध तथा एम. फिल. के लघु शोध प्रबंध सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुके हैं।

निष्कर्ष

प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती ने संगीत शिक्षा जगत में विचरण करते हुए सदैव एक आदर्श शिक्षिका की सार्थक भूमिका का निर्वाहन किया है। अपनी मौलिक सृजनात्मक और प्रभावी शिक्षण शैली के माध्यम से आपने अपने विद्यार्थियों को संगीत शास्त्र एवं कला से जुडे सूक्ष्म पहलुओं को देखने, समझने और ग्रहण करने की विश्लेषणात्मक शोधपरक दृष्टि प्रदान दी। उन्होंने अपने उच्च बौद्धिक स्तर से अर्जित एवं संचित विलक्षण निधि को अपने विद्यार्थियों में भी संप्रेषित किया, जिससे उनका गर्व और गौरव दोनों में गुणात्मक वृद्धि हो सकी।

संदर्भ

1 श्रीमती डॉ. अर्चना दीक्षित, विविध विषय विदूषी प्रो. प्रेमलता शर्मा- व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृष्ठ संख्या-42

2 अभिनंदन ग्रंथ पृष्ठ संख्या- 23
3 अभिनंदन ग्रंथ पृष्ठ संख्या- 20
4 श्री प्रफुल मेहरा से प्राप्त अनुसूची से उद्धरत सूचना
5 प्रो. काशीनाथ तिवारी से प्राप्त अनुसूची से उद्धरत सूचना
6 प्रो. गोरे लाल चंदेल से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
7 प्रो. मांडवी से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
8 श्रीमती इंदु से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
9 श्री निशिकांत बड़ोदेकर से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
10 प्रो. इंद्राणी चक्रवर्ती से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
11 प्रो. इंद्राणी चक्रवर्ती से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
12 अभिनन्दन ग्रन्थ पृष्ठ संख्या- 45
13 प्रो. इंद्राणी चक्रवर्ती से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना
14 अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ संख्या- 24
15 अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ संख्या- 31
16 अभिनन्दन ग्रंथ पृष्ठ संख्या- 18
17 डॉ. सुरत राम से प्राप्त अनुसूची से उद्धरत सूचना
18 अभिनन्दन ग्रन्थ पृष्ठ संख्या- 31